राग - अडाणा

थाट - आसावरी समय - रात्रि का द्वितीय प्रहर
वादी - सा (तारसप्तक) संवादी - प
जाति - संपूर्ण (वक्रक्रम से) प्रकृति - वीर और श्रृंगार
विकृत - ग, ध नी

आरोह - नी सा रे म प ध नी सां
अवरोह - सां ध नि प, मप ग म रे सा,
पकड़ - सां ध नी सां ध नि प, मप ग म रे सा

सरगम - गीत तीन ताल - झपताल

स्थाई	रें सां	रें नी सां	ध ध	नी प प
	म प	सां नी प	ग म	रे रे सा
	नी सा	रे म प	ध ध	रें सां -
	नी सा	रें रें सां	नी सां	ध नी सां
	x	2	0	3
अंतरा -	म म	प ध ध	सां -	नी सां सां
	नी नी	सां रें सां	रें सां	ध नी सां
	ग ग	म रें सां	रें सां	ध नी सां
	म प	सां नी प	ग म	रे रे सा
	x	2	0	3

शास्त्रीय जानकारी - इस राग की जाति के बारे में मतभेद हो सकता है। क्योंकि आरोह में गंधार वर्ज्य है और अवरोह में सरल रूप से गंधार और धैवत भी वर्जित है। सांनीधप, मगरेसा इस प्रकार सरल गंधार तथा धैवत नही आते है। इसलिये जाति षाडव / औडव होती है, । कई गुणीजन अवरोह में धैवत वर्जित करके षाडव / षाडव जाति भी मानते है। राग विस्तार करते समय

राग - अडाणा

मपनीसां गंमंरेंसा ऐसा प्रयोग होता ही है। ऐसा करने से जाति संपूर्ण-ओडव या संपूर्ण षाडव भी कह सकते हैं। वास्तव में वक्र सभी स्वर आरोह - अवरोह में प्रयुक्त होते हैं। इसलिये संपूर्ण / संपूर्ण ही मानना चाहिये।

दरबारी कानडा और अडाणा के स्वर एक जैसे ही है। परंतु दोनों का चलन भिन्न है। दरबारी कानडा में से बहुत राग उत्पन्न हुए हैं। उन सभी के चलन भिन्न-भिन्न होते हैं। इसलिये दरबारी और उनके प्रकारो से संभालते हुए इसे गाना चाहिये। यह प्राचीन और प्रसिद्ध राग है। इसमें ख्याल, ध्रुपद, धमार गाये जाते हैं। राग का संपूर्ण चलन मध्य और तार सप्तक में रहता है। सामान्यत: मध्य और द्रुत लय में ही इस राग का विस्तार होता है। वैसे यह राग बहुत विस्तारक्षम नही है। इस राग का रस वीर और श्रृंगार है। शुद्ध निषाद का प्रयोग कई गुनीजन कर लेते हैं। किन्तु शास्त्र की दृष्टि से सही नही है। धैवत छोडकर निप, निनिपमपसां इस प्रकार अंतरे का और चीजो के उठाव बहुत कर्णप्रिय लगते हैं।

स्वर - विस्तार -

(1) सा, निसारेसा निसारेध्वनिरेसा रेनिसारेगम ऽऽरेसा

(2) निसा, गऽऽमरेसा, रेंमपध्वऽनिप, मपनिपमप गऽऽम रेंसा।

(3) निसारेमपध्वनिप, मप निनिपमप मपनिप गऽऽमप मंपध्वध्वध्व निप, निप निमप, गऽऽगमरेऽऽसा।

4) मंमंपपध्वध्वनिनिसांऽऽध्वऽनि, सांनिरेंसांध्वऽऽनि मपध्वऽऽनि रेंसां, रेंनिसांरेंसांध्वऽऽनि मपध्वनिसांऽऽ ध्वऽऽनिरेंसां, निसांनीसांरेंसांध्वनिप, मपनिसांरेंऽऽसां रेंसांरेंनिरेध्वऽऽध्वनि ध्वऽऽनिसां निध्वध्वनिसांनिरेंसां रेंरेंसांनिसांरेंध्वनिप, निप, निनिपमपसांनिपगऽऽमरेसा

छोटा-ख्याल- अडाणा ताल - त्रिताल

स्थाई - गगरी मोरी भरन नही देत।
ढीट लँगरवा आ मतवारो ।②

अंतरा - जित जाऊँ उत आरो ही दौरत।
अब ना रहूँ मैं तोरी नगरीयाँ।

स्थाई -			रें सां ग ग
रें नी सां प री मो री भ	नी म प सां र न ना हि	सां - ध नि दे - - -	प - - - त - - -
म - म म ढी - ट लं	प प सां - ग र वा -	ग - ग म आ - म त	रे - सा - वा - रो -
म - म म ढी - ट लं 0	प प सां - ग र वा - 3	ग - ग म आ - म त x	रे सा सा - वा रो ग ग 2
अंतरा -			
म प ध नी जि त जा -	सां - सां सां ऊँ - उ त	नी सां रें सां आ - रो हि	ध नि प - प दौ र त
म प नि सां अ ब न र 0	ग म रें सां हूँ - मैं - 3	नि सां रें सां तो - री न x	धनि प रें सां गरीया ग ग 2

अडाणा ध्रुपद

ताल - चौताल

स्थाई - नीर क्षीर मिले दोऊ, एक थाई होत रहे।
नीर छाँड हँस जैसे, क्षीर को गहतु है।

अंतरा - कंचन में और धातु, मिलकर बान बच्यो।
शुद्ध कर कंचन सुनार जो गहतु है।

स्थाई -

सां -	नी सां	- सां	नि सां	रें ध	नि प
नी -	र क्षी	- र	मि ले	- दो	- ऊँ
म -	प सां	- सां	ग -	म रे	- सा
ए -	क था	- ई	हो -	त र	- हे
रे नि	सा ग	म प	ध -	नि सां	- सां
नी -	र छां	- ड	हँ -	स जै	- से
x	0	2	0	3	4
नि सां	नि रें	- सां	नि सां	रें ध	नि सां
क्षी -	र को	- ग	ह तु	- है	- -
x	0	2	0	3	4

अंतरा -

म -	प ध	- नि	सां -	नि सां	- सां
कं -	च न	- में	और -	र धा	- तु
नि सां	नि रें	- सां	नि सां	रें ध	नि प
मि ल	- क	- र	बा -	न प	- चो
x	0	2	0	3	4
गं -	गं गं	मं रें	रें -	सां नि	सां सां
शु -	द्ध क	- र	कं -	च न	- सु
नी सां	नि रें	- सां	नि सां	रें ध	नि सां
ना -	र ज्यों	- ल	ह तु	- है	- -
x	0	2	0	3	4

ध्रुपद

राग - अडाणा ताल - चौताल

स्थाई - कारे कुंजन कारे दंडन बाँधे कमर कारी
कालिन्दी तट पर, नीर पठाई कारे।

अंतरा - कारी बंसी अत कारी नाचत निरत करत।
कारी फूल बन की अंगलता कारे री।

स्थाई	नी सां	सां नी	प प	म प	प ग	म प
	का ऽ	रे कुं	ज न	का -	रे दं	ड न
	ग ग	ग म	- प	ग ग	म रे	- सा
	काँ -	- धें	- क	म -	र का	- री
	नी सा	- रे	म प	ध ध	ध ध	नी प
	कां -	- लि	- न्दि	त -	ट प	- र
	रें नी	सां ध	नी प	ग ग	म रे	- सा
	नी र	प ठा	- ई	का -	रे री	- -
	x	0	2	0	3	4
अंतरा	म प	प ध	ध नी	~~ध ध~~ रां सां	- नी	सां सां
	का -	री बं	- सी	अ त	- का	- री
	नी सां	- रें	- सां	नी सां	रें ध	नी प
	ना -	- च	- त	नि र	त क	र त
	गं गं	मं रे	- सां	नी सां	रें सां ध	नी प
	का -	री फू	- ल	ब न	- की	- -
	रें नी	सां नी	म प	ग ग	म रे	- सा
	अं ग	ल ता	- -	का -	रे री	- -
	x	0	2	0	3	4